अध्याय 10: मीरा के पद

विषय-सूची 11 प्रश्नावली · 25 प्रश्न

प्रश्नावली 10.1	मेरी समझ से	4 प्रश्न
प्रश्नावली 10.2	पंक्तियों पर चर्चा	2 प्रश्न
प्रश्नावली 10.3	मिलकर करें मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.4	सोच-विचार के लिए	2 प्रश्न
प्रश्नावली 10.5	विशेषताएँ	3 प्रश्न
प्रश्नावली 10.6	अनुमान और कल्पना से	2 प्रश्न
प्रश्नावली 10.7	पंक्ति से पंक्ति	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.8	कविता का सौंदर्य	2 प्रश्न
प्रश्नावली 10.9	मुहावरे	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.10	आपकी बात	6 प्रश्न
प्रश्नावली 10.11	शब्दों के रूप	1 प्रश्न

प्रश्नावली 10.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उनके सामने सही (✓) का निशान लगाइए। (एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।) "बरसो मेरे नैनन में नंदलाल" पद में मीरा किससे विनती कर रही है? (क) संतों से (ख) भक्तों से (ग) वैजंती से (घ) श्रीकृष्ण से

हल

पद में मीरा 'नंदलाल' से विनती कर रही हैं।
'नंदलाल' श्रीकृष्ण का ही नाम है — नंद के पुत्र, अर्थात् नंद के लाल।
पद की प्रथम पंक्ति 'बरसो मेरे नैनन में नंदलाल' में मीरा कृष्ण से अपने नेत्रों में बरसने की प्रार्थना करती हैं।
अतः उत्तर है — (घ) श्रीकृष्ण से।

उत्तर: (घ) श्रीकृष्ण से

प्रश्न 2

"बरसो मेरे नैनन में नंदलाल" पद का मुख्य विषय क्या है? (क) प्रेम और भक्ति (ख) प्रकृति की सुंदरता (ग) युद्ध और शांति (घ) ज्ञान और शिक्षा

हल

यह पद मीरा की श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम-भक्ति की अभिव्यक्ति है।
मीरा कृष्ण की मोहिनी मूर्ति, उनकी बाँसुरी, उनकी वैजंती माला और नूपुर का वर्णन करते हुए उन्हें 'सुखदाई' और 'भक्त वछल गोपाल' कहती हैं।
पूरे पद में भक्ति-रस और प्रेम का समावेश है।
अतः उत्तर है — (क) प्रेम और भक्ति।

उत्तर: (क) प्रेम और भक्ति

प्रश्न 3

"बरसे बदरिया सावन की" पद में कौन-सी ऋतु का वर्णन किया गया है? (क) शरद (ख) गर्मी (ग) वर्षा (घ) वसंत

हल

'सावन' वर्षा ऋतु का महीना है जो आषाढ़ के बाद और भाद्रपद से पहले आता है।
पद में बादलों का उमड़ना, बिजली का चमकना, मूसलाधार वर्षा का वर्णन है — ये सब वर्षा ऋतु के लक्षण हैं।
अतः उत्तर है — (ग) वर्षा।

उत्तर: (ग) वर्षा

प्रश्न 4

"बरसे बदरिया सावन की" पद को पढ़कर ऐसा लगता है, जैसे मीरा... (क) प्रसन्न हैं (ख) दुखी हैं (ग) उदास हैं (घ) चिंतित हैं

हल

पद में मीरा ने सावन की सुंदर बरसात का उत्साहपूर्ण चित्रण किया है।
'भनक सुनी हरि आवन की' — भक्त ने सुना है कि हरि आ रहे हैं, इससे मीरा के मन में प्रसन्नता और उमंग है।
अंत में 'आनंद मंगल गावन की' कहकर उन्होंने उत्सव का भाव व्यक्त किया है।
अतः उत्तर है — (क) प्रसन्न हैं।

उत्तर: (क) प्रसन्न हैं

प्रश्नावली 10.2 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें पढ़कर इनका अर्थ क्या आप अपनी समझ से साझा कर सकते हैं? अपने विचार लिखिए। (क) "नहीं नहीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सोहावन की।"

हल

यह पंक्ति पद-2 'बरसे बदरिया सावन की' से है।
'मेहा' = मेघ (बादल); 'बूँदन' = बूँदें; 'शीतल पवन सोहावन की' = सुहावनी ठंडी हवा।
अर्थ: मीरा कहती हैं — 'ये साधारण बरसात की बूँदें नहीं हैं, यह शीतल और सुहावनी पवन है।'
भाव: मीरा अनुभव कर रही हैं कि यह वर्षा कोई सामान्य वर्षा नहीं — यह प्रभु श्रीकृष्ण की कृपा और आनंद की वर्षा है जो उनके मन को तृप्त कर रही है।

उत्तर: मीरा कहती हैं कि ये साधारण बरसात की बूँदें नहीं हैं — यह श्रीकृष्ण की कृपा और शीतल आनंद की वर्षा है जो मन को सुहावनी लगती है।

प्रश्न 2

(ख) "मीरा के प्रभु संतन सुखदाई, भक्त वछल गोपाल।"

हल

यह पंक्ति पद-1 'बरसो मेरे नैनन में नंदलाल' की अंतिम पंक्ति है।
'सुखदाई' = सुख देने वाले; 'भक्त वछल' = भक्तों से प्रेम करने वाले (वत्सल); 'गोपाल' = गायों के पालक, श्रीकृष्ण।
अर्थ: मीरा के प्रभु (श्रीकृष्ण) सुख देने वाले हैं और भक्तों से अत्यंत प्रेम करते हैं।
भाव: मीरा श्रीकृष्ण के इन दो विशेष गुणों को रेखांकित करती हैं — वे भक्तों को सुख देते हैं और भक्तों पर स्नेह रखते हैं, इसीलिए मीरा उन्हें पूरी श्रद्धा से 'भक्त वछल गोपाल' कहती हैं।

उत्तर: मीरा के प्रभु श्रीकृष्ण सुख देने वाले हैं और अपने भक्तों से माँ के समान प्रेम (वात्सल्य) रखने वाले गोपाल हैं।

प्रश्नावली 10.3 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थों से मिलाइए। शब्द: 1. नंदलाल 2. वैजंती माल 3. सावन 4. गिरधर अर्थ/संदर्भ: 1. पर्वत को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण 2. सावन का महीना, आषाढ़ के बाद का और भाद्रपद से पहले का महीना 3. वैजयंती के बीजों से बनने वाली माला 4. नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण

हल

1. नंदलाल → 4. नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण
('नंद' यशोदा के पति और कृष्ण के पालक पिता थे; 'लाल' = पुत्र। अतः नंदलाल = नंद के पुत्र = श्रीकृष्ण।)
2. वैजंती माल → 3. वैजयंती के बीजों से बनने वाली माला
('वैजयंती' एक पौधे के बीजों से बनी माला जो श्रीकृष्ण के सीने पर शोभती है।)
3. सावन → 2. सावन का महीना, आषाढ़ के बाद का और भाद्रपद से पहले का महीना
(हिंदी कैलेंडर के अनुसार: आषाढ़ → सावन → भाद्रपद। सावन वर्षा ऋतु का प्रमुख महीना है।)
4. गिरधर → 1. पर्वत को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण
('गिरि' = पर्वत; 'धर' = धारण करने वाला। श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाया था, इसलिए 'गिरधर' कहलाए।)

उत्तर: नंदलाल → नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण; वैजंती माल → वैजयंती के बीजों से बनने वाली माला; सावन → आषाढ़ के बाद का और भाद्रपद से पहले का महीना; गिरधर → पर्वत को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण

प्रश्नावली 10.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

पाठ को एक बार फिर से पढ़िए, ध्यान लगाकर और लिखिए— (क) पहले पद में श्रीकृष्ण के बारे में क्या-क्या बताया गया है?

हल

पहले पद 'बरसो मेरे नैनन में नंदलाल' में श्रीकृष्ण के बारे में निम्न बातें बताई गई हैं:

1. मोहिनी मूरति: उनकी मूर्ति (रूप) मनमोहक है।
2. साँवरि सूरति: उनका रंग साँवला (श्याम) है।
3. नैना बने विशाल: उनकी आँखें बड़ी और सुंदर हैं।
4. अधर सुधा रस मूरली राजति: उनके होठों पर अमृत-रस से भरी बाँसुरी शोभायमान है।
5. उर वैजंती माल: उनके सीने पर वैजयंती के बीजों की माला पड़ी है।
6. क्षुद्र घंटिका कटिटार सोभित: उनकी कमर पर छोटी-छोटी घंटियाँ शोभित हैं।
7. नुपुर शब्द रसाल: उनके पैरों के नूपुर (पायल) की आवाज मधुर है।
8. सुखदाई: वे सुख देने वाले हैं।
9. भक्त वछल गोपाल: वे भक्तों से प्रेम करने वाले गोपाल हैं।

उत्तर: श्रीकृष्ण की मोहिनी और साँवली मूर्ति, विशाल नेत्र, अमृत-रस भरी बाँसुरी, वैजंती माला, कमर की घंटियाँ, मधुर नूपुर, सुखदाई स्वभाव और भक्त-वत्सल होने का वर्णन पहले पद में है।

प्रश्न 2

(ख) दूसरे पद में सावन के बारे में क्या-क्या बताया गया है?

हल

दूसरे पद 'बरसे बदरिया सावन की' में सावन के बारे में निम्न बातें बताई गई हैं:

1. मन भावन: सावन का महीना मन को बहुत प्रिय लगता है।
2. भक्त का मन उमड़ता है: 'सावन में उमड़ी मेरो मनवा' — सावन में मन में उमंग और भावनाएँ उमड़ती हैं।
3. हरि के आगमन की खबर: भक्त ने सुना है कि हरि इस सावन में आने वाले हैं।
4. बादलों का उमड़-घुमड़ कर आना: चारों दिशाओं से घने बादल आ रहे हैं।
5. बिजली की चमक: 'दामिन दमक' — बिजली चमक रही है।
6. झर-झर वर्षा: बादलों से झर-झर पानी गिर रहा है।
7. शीतल पवन: 'शीतल पवन सोहावन की' — ठंडी और सुहावनी हवा चल रही है।
8. आनंद और मंगल: सावन श्रीकृष्ण के आगमन का आनंद-उत्सव लेकर आया है।

उत्तर: दूसरे पद में सावन का वर्णन मन-भावन, उमड़-घुमड़ते बादलों, बिजली की चमक, झर-झर वर्षा, शीतल पवन और हरि के आगमन के आनंद-उत्सव के रूप में हुआ है।

प्रश्नावली 10.5 — विशेषताएँ

प्रश्न 1

"मोहिनि मूरति साँवरि सूरति, नैना बने विशाल।" (क) इस पंक्ति में कवयित्री ने श्रीकृष्ण की मोहनी मूरत, साँवरि सूरत और विशाल नैनों की बात की है। आपको श्रीकृष्ण की कौन-सी बातों में आकर्षित किया?

हल

इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी अपने विचारों के अनुसार दें।
संकेत: श्रीकृष्ण की विशेषताएँ — उनकी मनमोहक मूर्ति, साँवला रंग, विशाल नेत्र, मधुर बाँसुरी, सुखदाई स्वभाव और भक्तों पर वात्सल्य।
उदाहरण के लिए: श्रीकृष्ण की साँवरी सूरत और बाँसुरी की मधुर तान मन को सबसे अधिक आकर्षित करती है।

उत्तर: विद्यार्थी अपने जीवन से जुड़े उदाहरण और श्रीकृष्ण की जो विशेषता उन्हें सबसे अधिक आकर्षित करती हो, उसे लिखें।

प्रश्न 2

(ख) किसी व्यक्ति का कौन-सा गुण आपको सबसे अधिक आकर्षित करता है? क्यों? अपने जीवन से जुड़े किसी व्यक्ति का उदाहरण देकर बताइए।

हल

यह प्रश्न विद्यार्थी के व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है।
संकेत: आंतरिक गुण जैसे — ईमानदारी, दयालुता, परोपकारिता, साहस; बाहरी गुण जैसे — व्यवहार, बोलने का तरीका।
उदाहरण: मेरे शिक्षक का सबसे बड़ा गुण उनकी धैर्यता और मधुर वाणी है। वे हर प्रश्न को शांति से सुनते और समझाते हैं। इस गुण ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया।

उत्तर: विद्यार्थी अपने जीवन से जुड़े किसी व्यक्ति का उदाहरण देकर उस गुण का वर्णन करें जो उन्हें सबसे अधिक आकर्षित करता हो।

प्रश्न 3

(ग) हम सबकी कुछ विशेषताएँ बाहर से और कुछ अंदर से होती हैं। बाहर की विशेषताएँ तो हमें दिखाई दे जाती हैं, लेकिन आंतरिक विशेषताएँ व्यक्ति के व्यवहार से पता चलती हैं। आप अपनी दोनों प्रकार की विशेषताओं की सूची बनाकर उदाहरण दीजिए।

हल

बाहरी विशेषताएँ वे होती हैं जो देखने में स्पष्ट दिखती हैं — जैसे रंग, रूप, लंबाई, आवाज आदि।
आंतरिक विशेषताएँ वे होती हैं जो व्यवहार से पता चलती हैं — जैसे ईमानदारी, दयालुता, मेहनती, धैर्यवान।
उदाहरण तालिका:
बाहरी विशेषताएँ: मेरे बाल घुंघराले हैं; मेरी आवाज मृदु है; मैं लंबा/लंबी हूँ।

आंतरिक विशेषताएँ: मैं ईमानदार हूँ — दूसरे की वस्तु नहीं लेता; मैं दयालु हूँ — जरूरतमंदों की मदद करता हूँ; मैं मेहनती हूँ — पढ़ाई नियमित करता हूँ।

उत्तर: विद्यार्थी अपनी बाहरी विशेषताओं (रंग, रूप, आवाज) और आंतरिक विशेषताओं (ईमानदारी, दयालुता, मेहनत) की सूची बनाकर उदाहरण सहित लिखें।

प्रश्नावली 10.6 — अनुमान और कल्पना से

प्रश्न 1

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए— (क) यदि कोई कहता है कि मीरा को श्रीकृष्ण के आने का संदेश मिलता है तो आपको क्या लगता है कि उन्हें क्या होगा? कैसे क्या होगा?

हल

मीरा श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थीं। यदि उन्हें कृष्ण के आने का संदेश मिले तो:

1. वे अत्यंत प्रसन्न हो जातीं और उनका मन उमंग से भर जाता।
2. वे भजन गाने लगतीं और नृत्य करने लगतीं।
3. वे घर-द्वार को सजातीं और सावन की खुशियाँ मनातीं।
4. उनके नेत्रों में प्रेम के आँसू आ जाते।
5. वे 'आनंद मंगल गावन की' — आनंद-उत्सव मनातीं।

उत्तर: श्रीकृष्ण के आगमन का संदेश मिलने पर मीरा उत्साह और आनंद से भर जातीं, भजन और नृत्य करतीं, और उनका मन प्रेम-भक्ति में डूब जाता।

प्रश्न 2

(ख) यदि आपको मीरा से बातचीत करने का अवसर मिल जाए तो आप उनसे क्या-क्या पूछेंगे और क्या-क्या पूछेंगे?

हल

यदि मुझे मीरा से बात करने का मौका मिले तो मैं उनसे पूछता/पूछती:

1. आपने श्रीकृष्ण की भक्ति कब और कैसे शुरू की?
2. भक्ति की राह पर इतने कष्टों के बाद भी आपने हार क्यों नहीं मानी?
3. अपने पदों की रचना करते समय आप क्या अनुभव करती थीं?
4. आपके सावन के पद में 'नहीं नहीं बूँदन मेहा बरसे' — इसका क्या भाव था?
5. श्रीकृष्ण से आपकी पहली मुलाकात का अनुभव कैसा था?

उत्तर: विद्यार्थी अपनी जिज्ञासा के अनुसार मीरा से पूछे जाने वाले प्रश्न लिखें — उनकी भक्ति, जीवन, कष्ट और काव्य-रचना के बारे में।

प्रश्नावली 10.7 — पंक्ति से पंक्ति

प्रश्न 1

नीचे स्तम्भ 1 और स्तम्भ 2 में कुछ मिलती-जुलती पंक्तियाँ दी गई हैं। इन्हें सही तरह से मिलाइए— स्तम्भ 1: 1. अधर सुधा रस मूरली राजति, उर वैजंती माल 2. क्षुद्र घंटिका कटिटार सोभित, नुपुर शब्द रसाल 3. मीरा के प्रभु संतन सुखदाई, भक्त वछल गोपाल 4. सावन में उमड़ी मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की 5. उमड़ घुमड़ चहुँ दिसा से आया, दामिन दमक के झर लावन की स्तम्भ 2: 1. चारों दिशाओं से बादल उमड़-घुमड़ कर बरस रहे हैं, बिजली चमक रही है, पानी की झड़ी लगी हुई है 2. होठों पर सुलगती धुनों से भरी हुई बाँसुरी और छाती पर वैजंती माला शोभित है 3. सावन के महीने में मेरा मन उमड़ रहा है, भक्त ने सुना है कि हरि आ रहे हैं 4. वे भगवान जो मीरा के लिए हर सुख देने वाले हैं, भक्तों का पालन करने वाले गोपाल हैं 5. कमर पर छोटी-छोटी घंटियाँ बजी हुईं और पैरों में बँधे हुए नूपुर मधुर आवाज में बोल रहे हैं

हल

पंक्तियों का अर्थ के आधार पर सही मिलान:

स्तम्भ 1, पंक्ति 1 (अधर सुधा रस मूरली राजति, उर वैजंती माल) → स्तम्भ 2, पंक्ति 2 (होठों पर बाँसुरी और छाती पर वैजंती माला)

('अधर' = होठ; 'मूरली' = बाँसुरी; 'उर' = छाती/सीना; 'वैजंती माल' = वैजयंती की माला — अतः पंक्ति 2 सही मेल है।)

स्तम्भ 1, पंक्ति 2 (क्षुद्र घंटिका कटिटार सोभित, नुपुर शब्द रसाल) → स्तम्भ 2, पंक्ति 5 (छोटी-छोटी घंटियाँ और नूपुर मधुर आवाज में)

('क्षुद्र घंटिका' = छोटी-छोटी घंटियाँ; 'नुपुर शब्द रसाल' = नूपुर की मधुर आवाज — अतः पंक्ति 5 सही मेल है।)

स्तम्भ 1, पंक्ति 3 (मीरा के प्रभु संतन सुखदाई, भक्त वछल गोपाल) → स्तम्भ 2, पंक्ति 4 (सुख देने वाले, भक्तों का पालन करने वाले गोपाल)

('सुखदाई' = सुख देने वाले; 'भक्त वछल' = भक्तों का पालन करने वाले — अतः पंक्ति 4 सही मेल है।)

स्तम्भ 1, पंक्ति 4 (सावन में उमड़ी मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की) → स्तम्भ 2, पंक्ति 3 (सावन में मन उमड़ रहा है, हरि आ रहे हैं)

('मनवा उमड़ना' = मन का भावनाओं से भर जाना; 'हरि आवन की' = हरि के आने की खबर — अतः पंक्ति 3 सही मेल है।)

स्तम्भ 1, पंक्ति 5 (उमड़ घुमड़ चहुँ दिसा से आया, दामिन दमक के झर लावन की) → स्तम्भ 2, पंक्ति 1 (चारों दिशाओं से बादल उमड़-घुमड़, बिजली, झड़ी)

('चहुँ दिसा' = चारों दिशाएँ; 'दामिन दमक' = बिजली की चमक; 'झर लावन' = झड़ी लगाना — अतः पंक्ति 1 सही मेल है।)

उत्तर: पंक्ति 1 → 2, पंक्ति 2 → 5, पंक्ति 3 → 4, पंक्ति 4 → 3, पंक्ति 5 → 1

प्रश्नावली 10.8 — कविता का सौंदर्य

प्रश्न 1

"बरसे बदरिया सावन की।" इस पंक्ति में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। क्या आपको कोई विशेष बात दिखाई दी? इस पंक्ति में 'बरसे' और 'बदरिया' दोनों एक ही वर्ण से शुरू होते हैं और दोनों 'ब' वर्ण से शुरू हो रहे हैं। दोनों शब्दों में 'र' वर्ण की आवृत्ति हो रही है। इस कारण पंक्ति पढ़ने पर और भी अधिक सुंदर बन गई है। पाठ में इस प्रकार के अन्य उदाहरण ढूँढकर लिखिए।

हल

इस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है — एक ही वर्ण की आवृत्ति से पंक्ति का सौंदर्य बढ़ता है।
पाठ में अनुप्रास के अन्य उदाहरण:
1. 'मोहिनि मूरति साँवरि सूरति' — 'म' और 'स' वर्ण की आवृत्ति।
2. 'साँवरि सूरति' — 'स' वर्ण की आवृत्ति।
3. 'शीतल पवन सोहावन की' — 'स' और 'व' वर्ण।
4. 'सावन में उमड़ी...सुनी...सोहावन की' — 'स' वर्ण की बार-बार आवृत्ति।
5. 'दामिन दमक' — 'द' वर्ण की आवृत्ति।

उत्तर: पाठ में अनुप्रास के उदाहरण: 'मोहिनि मूरति', 'साँवरि सूरति', 'शीतल...सोहावन', 'दामिन दमक' आदि।

प्रश्न 2

पाठ के किसी एक पद को एक अनुच्छेद के रूप में लिखिए। उदाहरण के लिए — 'सावन के बादल बरस रहे हैं...' या 'सावन की बदरिया बरसती है...' आदि।

हल

उदाहरण (पद-2 का गद्य रूप):
सावन की मनभावनी बदरिया बरस रही है। मेरे मन में श्रीकृष्ण के आगमन की उमंग उमड़ रही है क्योंकि मैंने सुना है कि हरि आने वाले हैं। चारों दिशाओं से बादल उमड़-घुमड़ कर आ रहे हैं, बिजली चमक रही है और झर-झर वर्षा हो रही है। यह बूँदें साधारण नहीं हैं — शीतल और सुहावनी हवा के साथ यह वर्षा श्रीकृष्ण के स्वागत का उत्सव है। मीरा के प्रभु गिरधरनागर का आनंद-मंगल गान हो रहा है।
नोट: यह प्रश्न रचनात्मक है — विद्यार्थी अपनी भाषा में लिख सकते हैं।

उत्तर: विद्यार्थी किसी एक पद को गद्य में अपनी भाषा में लिखें। उदाहरण: सावन की बदरिया बरस रही है... (पद-2 का गद्य रूपांतरण)।

प्रश्नावली 10.9 — मुहावरे

प्रश्न 1

"बरसो मेरे नैनन में नंदलाल।" नैनों या आँखों से जुड़ा एक मुहावरा है जिसका प्रयोग किया जाता है कि जब कोई किसी व्यक्ति या वस्तु अधिक प्रिय लगती है तो हम कहते हैं — 'वह हमारी आँखों का तारा है।' इस तरह नीचे दिए गए आँखों से जुड़े मुहावरों के अर्थ समझाइए और इन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए। 1. आँखों का तारा 2. आँखों पर पर्दा पड़ना 3. आँखों के आगे/सामने उठना 4. आँख दिखाना 5. आँख का काँटा 6. आँख फेरना 7. आँख भर आना 8. आँखें चुराना 9. आँखों से उठाना 10. आँखों में खटकना

हल

1. आँखों का तारा — अर्थ: बहुत प्रिय होना। वाक्य: राहुल अपनी दादी की आँखों का तारा है।
2. आँखों पर पर्दा पड़ना — अर्थ: सच्चाई न दिखना, धोखे में रहना। वाक्य: लालच में आकर उसकी आँखों पर पर्दा पड़ गया।
3. आँखों के आगे अँधेरा छाना — अर्थ: घबरा जाना, निराश हो जाना, अचानक कुछ न सूझना। वाक्य: बुरी खबर सुनते ही उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया।
4. आँख दिखाना — अर्थ: क्रोध से देखना, डराना। वाक्य: कक्षा में शोर करने पर अध्यापिका ने आँख दिखाई।
5. आँख का काँटा — अर्थ: जो व्यक्ति अखरता हो, जो पसंद न हो। वाक्य: भ्रष्ट अधिकारी ईमानदार लोगों की आँख का काँटा बन जाते हैं।
6. आँख फेरना — अर्थ: उपेक्षा करना, अनदेखी करना। वाक्य: मुसीबत में पड़ने पर कुछ मित्र आँख फेर लेते हैं।
7. आँख भर आना — अर्थ: आँखों में आँसू आना। वाक्य: बिछड़े हुए मित्र को देखकर उसकी आँख भर आई।
8. आँखें चुराना — अर्थ: शरमाना, किसी से मिलने से बचना। वाक्य: गलती करने के बाद वह मुझसे आँखें चुराता रहा।
9. आँखों से उतारना — अर्थ: नज़रों से गिरना, सम्मान/प्रतिष्ठा कम होना। वाक्य: विश्वासघात करने पर वह सबकी आँखों से उतर गया।
10. आँखों में खटकना — अर्थ: बुरा लगना, पसंद न आना। वाक्य: उसकी घमंडी बातें सबकी आँखों में खटकती हैं।

उत्तर: दस मुहावरे और उनके अर्थ: आँखों का तारा (बहुत प्रिय), आँखों पर पर्दा पड़ना (सच न दिखना), आँखों के आगे अँधेरा छाना (घबरा जाना), आँख दिखाना (डराना), आँख का काँटा (अखरने वाला), आँख फेरना (उपेक्षा करना), आँख भर आना (रोना), आँखें चुराना (शरमाना/बचना), आँखों से उतारना (नज़रों से गिरना), आँखों में खटकना (बुरा लगना)।

प्रश्नावली 10.10 — आपकी बात

प्रश्न 1

"बरसे बदरिया सावन की" (क) इस पाठ में सावन का सुंदर चित्रण किया गया है। जब आप गाँव या शहर में सावन में होते हैं तो मौसम में क्या परिवर्तन आते हैं? बताइए।

हल

गाँव में सावन के मौसम में होने वाले परिवर्तन:
1. किसानों की धान की रोपाई शुरू हो जाती है और खेत हरे-भरे हो जाते हैं।
2. नदियाँ और तालाब भर जाते हैं।
3. पेड़-पौधे हरे हो जाते हैं और वातावरण ताजगी से भर जाता है।

शहर में सावन के परिवर्तन:
1. सड़कों पर पानी भर जाता है।
2. आसमान में काले-काले बादल छा जाते हैं और ठंडी हवा चलती है।
3. बच्चे बारिश में खेलते हैं।

(उदाहरण के लिए — बिजली का चमकना, तेज हवा, मेंढकों की आवाज आदि।)

उत्तर: सावन में मौसम के परिवर्तन: बादल, बिजली, वर्षा, शीतल हवा; गाँव में हरियाली और खेती; शहर में सड़कों पर पानी — विद्यार्थी अपने अनुभव लिखें।

प्रश्न 2

सावन की ऋतु में किस-किस प्रकार की गतिविधियाँ उत्पन्न होती हैं? इन धारणाओं को अपने समूह के साथ सूचीबद्ध कीजिए (उदाहरण — बिजली का कड़कड़ाना या बत्ती जाने पर मोमबत्ती जलाने की चर्चा)।

हल

सावन में होने वाली गतिविधियाँ:
1. छाते और रेनकोट का उपयोग।
2. बिजली के कड़कड़ाने पर दरवाजे-खिड़कियाँ बंद करना।
3. गर्म चाय और पकोड़े खाने की इच्छा।
4. बच्चों का बारिश में खेलना और कागज की नावें बनाना।
5. तीज का त्योहार — झूला झूलना, मेहँदी लगाना।
6. किसानों का बीज बोना और खेतों में काम करना।
7. नदी-तालाब के किनारे जाना।

नोट: विद्यार्थी अपने समूह के अनुभव साझा करें।

उत्तर: सावन की गतिविधियाँ: छाते का उपयोग, चाय-पकोड़े, बच्चों का खेलना, तीज-त्योहार, झूला झूलना, किसानों की खेती — विद्यार्थी समूह चर्चा में जोड़ें।

प्रश्न 3

वर्षा की ऋतु में किस-किस प्रकार की गतिविधियाँ उत्पन्न होती हैं? आपके यहाँ कौन-कौन-सी गतिविधियाँ होती हैं जो किसी क्षेत्र में खेलने से जुड़ी हों? (उदाहरण के लिए — बिजली के कड़कड़ाने या बत्ती जाने की चर्चा।)

हल

वर्षा ऋतु में खेलने-संबंधी गतिविधियाँ:

1. बारिश में बाहर खेलना — कीचड़ में दौड़ना और खेलना।
2. कागज की नावें बनाकर पानी में बहाना।
3. बारिश में नहाने की मस्ती।
4. गाँव में झूला झूलना और लोकगीत गाना।
5. इनडोर खेल जैसे कैरम, लूडो, शतरंज।

नोट: विद्यार्थी अपने क्षेत्र की विशेष गतिविधियाँ बताएँ।

उत्तर: वर्षा में गतिविधियाँ: बारिश में खेलना, कागज की नाव, झूला झूलना, इनडोर खेल — विद्यार्थी अपने क्षेत्र की गतिविधियाँ लिखें।

प्रश्न 4

सावन के महीने में किस प्रकार के लोकगीत गाए जाते हैं? किसी एक एक बार फिर से सुनाने की कोशिश कीजिए (किसी क्षेत्र के विशेष में अपने अनुभव बताइए)।

हल

सावन में लोकगीतों की परंपरा:

1. कजरी — सावन की प्रसिद्ध लोक धुन, जिसमें सावन की फुहारों और प्रियजन की याद का वर्णन होता है।
2. मल्हार — वर्षा ऋतु का राग, इसे सुनने से वर्षा होने की मान्यता है।
3. तीज के गीत — महिलाएँ झूला झूलते हुए तीज के गीत गाती हैं।
4. मीरा के पद — भक्ति और सावन का सुंदर संगम।

नोट: विद्यार्थी अपने क्षेत्र के लोकगीत सुनाएँ और बताएँ।

उत्तर: सावन में कजरी, मल्हार, तीज के गीत और भक्ति-पद गाए जाते हैं। विद्यार्थी अपने क्षेत्र का कोई गीत सुनाएँ।

प्रश्न 5

"बरसो मेरे नैनन में नंदलाल" (ख) इस पद में मीरा ने श्रीकृष्ण को 'सुख देने वाला' और 'भक्तों का पालन करने वाला' बताया है। 1. क्या आपके जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति है जो सदैव आपकी सहायता करता है और आपको आनंदित-खुश रखता है? विस्तार से बताइए।

हल

यह प्रश्न विद्यार्थी के व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है।

संकेत: जो व्यक्ति सदैव सहायता करे और खुश रखे — जैसे माँ, पिताजी, दादा-दादी, मित्र, शिक्षक।

उदाहरण: मेरी माँ मेरे जीवन में 'सुखदाई' हैं। वे हर मुश्किल में मेरी सहायता करती हैं, मेरी बात सुनती हैं और मुझे सही राह दिखाती हैं। जैसे मीरा के प्रभु गोपाल भक्तों का पालन करते हैं, वैसे ही मेरी माँ मेरा ध्यान रखती हैं।

उत्तर: विद्यार्थी अपने जीवन के किसी प्रिय व्यक्ति का उदाहरण देकर लिखें जो उन्हें सदैव सहायता करता हो और खुश रखता हो।

प्रश्न 6

2. कवयित्री ने 'नूपुर' और 'घंटिका' का अलग-अलग प्रयोग किया है। जैसे उदाहरणों का प्रयोग किया गया है (जैसे किसी किताब का वाक्य जो छोटे-छोटी बातों का ध्यान रखे और उन्हें जीवन में उदाहरण बना सके), किसी भी किसी व्यक्ति की बात को जाना जा सके — आपको क्या लगता है?

हल

नोट: यह प्रश्न विद्यार्थी की रचनात्मक सोच पर आधारित है।
संकेत: 'नूपुर' = पैरों का आभूषण जो मधुर आवाज करता है; 'घंटिका' = छोटी घंटी।
दोनों आभूषण मधुर ध्वनि उत्पन्न करते हैं — जैसे किसी व्यक्ति की सुंदर और मधुर वाणी उसके व्यक्तित्व की पहचान बन जाती है।
विद्यार्थी अपने जीवन से ऐसे उदाहरण दें जहाँ किसी छोटी बात से किसी बड़े व्यक्तित्व की पहचान हुई हो।

उत्तर: नूपुर और घंटिका दोनों मधुर ध्वनि के प्रतीक हैं — जैसे मधुर वाणी और छोटी-छोटी सकारात्मक आदतें किसी के व्यक्तित्व को पहचानने में मदद करती हैं।

प्रश्नावली 10.11 — शब्दों के रूप

प्रश्न 1

पद में आई ब्रज-भाषा के इन शब्दों को शुद्ध (मानक) हिंदी रूप में लिखिए— नैनन, मूरति, सूरति, साँवरि, सोभित, बदरिया, मनवा, आवन, दिसा, मेहा।

हल

पद 'मोहनि मूरति साँवरि सूरति, नैना बने विशाल' तथा 'बरसे बदरिया सावन की' में आए ब्रज-शब्दों के मानक हिंदी रूप इस प्रकार हैं:

नैनन = नयन / आँखें

मूरति = मूर्ति

सूरति = सूरत / रूप

साँवरि = साँवली

सोभित = शोभित (सुशोभित)

बदरिया = बदली / बादल

मनवा = मन

आवन = आना / आगमन

दिसा = दिशा

मेहा = मेघ / बादल

उत्तर: नैनन=नयन/आँखें; मूरति=मूर्ति; सूरति=रूप; साँवरि=साँवली; सोभित=शोभित; बदरिया=बादल; मनवा=मन; आवन=आगमन; दिसा=दिशा; मेहा=मेघ।